

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है

## पारा (01) अलिफ़ लाम मीम

### सूरह (001) अल फ़ातिहा

तरतीब के लिहाज़ से यह कुरआन की पहली और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली सूरह है। "फ़ातिहा" कहते हैं जिससे किसी मज़मून या किताब या किसी चीज़ की शुरुआत हो। दूसरे लफ़्ज़ों में इसे दीबाचा [भूमिका, प्रस्तावना] और आज़ाज़े-कलाम [प्राक्कथन] का समानार्थी कहा जा सकता है।

वास्तव में यह सूरह एक दुआ है जो अल्लाह ने हर उस बंदे को सिखाई है जो उसकी किताब को पढ़ना शुरू कर रहा हो। किताब के शुरू में इसको रखने का मतलब यह है कि अगर हकीकत में इस किताब से फ़ायदा उठाना है तो पहले रब्बुल आलमीन (जगत-स्वामी) से यह दुआ करनी चाहिए।

सूरह अल फ़ातिहा के कई नाम हैं, जैसे उम्मुल कुरआन (कुरआन की मां) अस सबउल मसानी (बार बार पढ़ी जाने वाली सात आयात), अल कुरआन अल अज़ीम (अज़मत वाला कुरआन), अस शिफ़ा, अर रकीय: (दम) वगैरह

इस सूरह में बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम समेत कुल 7 आयतें हैं। आयत 1 से 4 तक अल्लाह तबारक व तआला की तारीफ़ है और तारीफ़ करने की वजह यह बताई गई है कि वह (1) तमाम दुनिया का पालनहार है। (2) रहमान और रहीम है। (3) बदले के दिन का मालिक है। आयत 5 में एक इक्रार और वादा है जो एक इंसान अपने ख़ से करता है कि हम किसी और की नहीं बल्कि केवल तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद भी चाहते हैं। आयत 6 से दुआ शुरू होती है "ऐ अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा दे वह सीधा रास्ता जिस पर चल कर लोग इनआम (जन्नत) के हक़दार क्रार पाते हैं। और उन लोगों के रास्ते से महफूज़ रख जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ (जो नरक में जाएंगे) और जो गुमराह हो गए हैं"

ग़ैरिल मगज़ूब से मुराद यहूदी (Jews) और ज़ाललीन से मुराद ईसाई (christian) हैं।



## सूरह (002) अल बक्ररह आयत 01 से 141 तक

### (i) इंसान की अक़साम

- इंसान की तीन किस्में हैं। ईमान वाले, मुनाफ़ेक़ीन (कपटी), काफ़िर
- ईमान वालों की पांच विशेषताएं ईमान बिल ग़ैब, नमाज़ कायम करना, इनफ़ाक़ (अल्लाह के रास्ते में खर्च करना) आसमानी किताबों पर ईमान, परलोक पर विश्वास
- मुनाफ़ेक़ीन की कई आदतों का ज़िक्र आया है झूठ, धोखा, गैर-चेतना (Non-consciousness) हार्दिक रोग, बेवकूफ़ीयाँ, अल्लाह के हुक्म के साथ मज़ाक़, फ़ितना व फ़साद, जिहालत, गुमराही और तज़बज़ुब।
- काफ़िरो के बारे में बताया गया कि उनके दिलों और कानों पर मुहर लगी हुई है और आंखों पर पर्दा पड़ा हुआ है।

### (ii) कुरआन का चमत्कार (Miracle of Quran)

जिन सूरतों में कुरआन की अज़मत बयान हुई है उनके शुरू में \*हुरुफ़े मुक़त्तेआत\* हैं यह बताने के लिए कि इन्हीं हुरुफ़ से तुम्हारा कलाम भी बनता है और अल्लाह तबारक व तआला का भी,

मगर वहीं आयत 23 में ज़बरदस्त चैलेन्ज भी किया गया है कि

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ  
और अगर तुम्हें इस मामले में शक है कि ये किताब जो हमने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर उतारी है, तो ज़रा इस जैसी एक सूरह बना लाओ, और अल्लाह को छोड़कर अपने सारे हिमायतियों को भी बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।

और आयत 24 में वार्निंग भी दे दी है:

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا

चुनांचे अगर तुम ये नहीं कर सकते और हरगिज़ नहीं कर सकोगे।

### (iii) आदम अलैहिस्सलाम का वाक्या

अल्लाह तआला का आदम अलैहिस्सलाम को खलीफ़ा बनाना, फ़रिशतों का इंसान को फ़सादी कहना, आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह की तरफ़ से इल्म अता किया जाना, फ़रिशतों का इल्म ग़ैब न होने का इक्कार, आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिशतों और ज़िन्नो से सज्दा करवाना, इब्लीस का सज्दा करने से इक्कार करना और मरदूद ठहरना, ज़न्नत में आदम व हव्वा का रहना, फिर इब्लीस के बहकावे के आना, ग़लती का एहसास, माफ़ी चाहना और माफ़ी का कुबूल होना और फिर इंसान को ज़मीन की ख़िलाफ़त अता होना। (31 से 39)

#### नोट -: आदम और इब्लीस में फ़र्क़

- इब्लीस की पैदाइश आग से हुई और आदम की मिट्टी से।
- ग़लती दोनों ने की, इब्लीस ने सज्दा नहीं किया और अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की। आदम ने उस पौदे का फल खा लिया जिसको खाने से उन्हें मना किया गया था।
- लेकिन इब्लीस ने अपनी ग़लती तस्लीम नहीं की और अकड़ गया उसकी अकड़ और घमंड ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा दुनिया में भी बेइज़्जत हुआ और आख़िरत में उसका ठिकाना जहन्नम है।
- जबकि आदम ने भी इब्लीस के बहकावे में आ कर अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की लेकिन ग़लती का फ़ौरन एहसास हुआ और अल्लाह से माफ़ी मांगी।
- हम सब आदम की औलाद हैं इसलिए जाने अनजाने में ग़लतियां तो होंगी लेकिन जैसे ही एहसास हो अपने रब्ब के हुज़ूर सच्चे दिल से तौबा करके हमें अपनी ग़लतियों पर माफ़ी मांगनी चाहिए।

### (iv) जादू शैतानी काम है

कुछ लोग जादू को सुलैमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब करते थे हालांकि कि जादू कुफ़्र और शैतान का काम है। अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई नुक़सान नहीं पहुंच सकता। जादू हारूत मारूत दो फ़रिशते सिखाते थे लेकिन जो सीखना चाहता उसे पहले मना करते हुए कहते थे कि देखो यह फ़ितना है। जो जादू करेगा आख़िरत में उसके लिए कोई हिस्सा नहीं। (102)

#### **(v) बनी इस्राईल के हालात**

बनी इस्राईल का अल्लाह की नेअमतों पर नाशुक्री करना और नबियों की नाफ़रमानी के कारण उन पर अल्लाह की फटकार। (40 से 122)

#### **(vi) इब्राहिम अलैहिस्सलाम का वाक़या**

इब्राहिम अलैहिस्सलाम का अपने बेटे के साथ मिल कर ख़ाना ए काबा की तामीर करना। इसे अम्न की जगह और यहां बसने वालों के लिए रिज़्क की फ़राहमी की दुआ और वह दुआ : ,ऐ रब ! इन लोगों में खुद इन्हीं की क़ौम से एक ऐसा रसूल उठा, जो इन्हें तेरी आयतें सुनाए, इनको किताब और हिकमत की तालीम दे और इनकी ज़िन्दगियाँ सँवारे। तू बड़ा ज़बरदस्त और हिकमतवाला [तत्त्वदर्शी] है। (124 से 129)

#### **(vii) रसूलों में तफ़रीक़ मुमकिन नहीं**

दुनिया मे जितने भी रसूल आये उनको बग़ैर कमी बेशी के अल्लाह का रसूल मानना भी ईमान का हिस्सा है। (आयत 136)